पाठ-बोधन
(Comprehension)

18

किसी दिए गए पाठ को पढ़कर अध्येता द्वारा प्रतिपाद्य विषय तथा गद्यांश में निहित मूल अर्थ को हृदयंगम करना ही पाठ-बोधन कहलाता है। इस प्रकार का अभ्यास परीक्षार्थी की योग्यता को जाँचने का सर्वोचित मापदण्ड होता है। पूर्वाभ्यास के बावजूद इससे परीक्षार्थी की सही सूझ-बूझ तथा ग्रहण करने की सही क्षमता की परख की जा सकती है।

पाठ-बोधन संबंधी सामान्य बातें

1. दिए गए पाठ का स्तर, विचार, भाषा, शैली आदि प्रत्येक दृष्टि से परीक्षा के स्तर के अनुरूप होता है।
2. पाठ का स्वरूप साहित्यिक (अधिकांशतः), वैज्ञानिक, विवरणात्मक आदि होता है।
3. दिया गया पाठ अपठित *(अर्थात् जो पढ़ा न गया हो)* होता है।
4. अपठित पाठ प्रायः गद्यांश होते हैं, किसी-किसी परीक्षा में पद्यांश भी।
5. पाठ से ही संबंधित कुछ वस्तुनिष्ठ प्रश्न नीचे दिए गए होते हैं तथा प्रत्येक के चार/पाँच वैकल्पिक उत्तर सुझाए गए होते हैं। परीक्षार्थी को इनमें से सही उत्तर चुनकर उसे निर्देशानुसार चिह्नित करना होता है।

पाठ-बोधन पर आधारित प्रश्नों को हल करने की विधि

1. प्रथम चरण में पाठ को शीघ्रता से किन्तु ध्यानपूर्वक पढ़कर विषय-वस्तु तथा केन्द्रीय भाव को जानने का प्रयास करें।
2. दूसरे चरण में पाठ को धीरे-धीरे एवं पूरे मनोयोग से नीचे दिए गए प्रश्नों को ध्यान में रखते हुए पढ़ें। संभावित उत्तरों को साथ-साथ रेखांकित करें।
3. तीसरे चरण में प्रश्नों के सही उत्तरों को सावधानीपूर्वक चिह्नांकित करें।

नोट : *(i) उत्तर पाठ पर ही आधारित होने चाहिए। कल्पना पर आधारित उत्तर से बचना चाहिए।*
(ii) उत्तर प्रसंगानुकूल एवं सीधा होना चाहिए।
(iii) प्रत्येक विकल्प पर विचार करके देखें कि उनमें से किसके अर्थ की संगति संबंधित वाक्य के साथ सही बैठती है।

1.

वैज्ञानिक प्रयोग की सफलता ने मनुष्य की बुद्धि का अपूर्व विकास कर दिया है। द्वितीय महायुद्ध में एटम बम की शक्ति ने कुछ क्षणों में ही जापान की अजेय शक्ति को पराजित कर दिया। इस शक्ति की युद्धकालीन सफलता ने अमेरिका, रूस, ब्रिटेन, फ्रान्स आदि सभी देशों को ऐसे शस्त्रास्त्रों के निर्माण की प्रेरणा दी कि सभी भयंकर और सर्वविनाशकारी शस्त्र बनाने लगे। अब सेना को पराजित करने तथा शत्रु-देश पर पैदल सेना द्वारा आक्रमण करने के लिए शस्त्र-निर्माण के स्थान पर देश के विनाश करने की दिशा में शस्त्रास्त्र बनने लगे हैं। इन हथियारों का प्रयोग होने पर शत्रु-देशों की अधिकांश जनता और संपत्ति थोड़े समय में ही नष्ट की जा सकेगी। चूँकि ऐसे शस्त्रास्त्र प्रायः सभी स्वतन्त्र देशों के संग्रहालयों में कुछ न कुछ आ गये हैं, अतः युद्ध की स्थिति में उनका प्रयोग भी अनिवार्य हो जायेगा। अतः दुनिया का सर्वनाश या अधिकांश नाश तो अवश्य ही हो जायेगा। इसीलिए निःशस्त्रीकरण की योजनाएँ बन रही हैं। शस्त्रास्त्रों के निर्माण में जो दिशा अपनाई गई, उसी के अनुसार आज इतने उन्नत शस्त्रास्त्र बन गये हैं, जिनके प्रयोग से व्यापक विनाश आसन्न दिखाई पड़ता है। अब भी परीक्षणों की रोकथाम तथा बने शस्त्रों के प्रयोग के रोकने के मार्ग खोजे जा रहे हैं। इन प्रयासों के मूल में एक भयंकर आतंक और विश्व-विनाश का भय कार्य कर रहा है।

1. इस गद्यांश का मूल कथ्य क्या है ?
   (a) आतंक और सर्वनाश का भय
   (b) विश्व में शस्त्रास्त्रों की होड़
   (c) द्वितीय विश्वयुद्ध की विभीषिका
   (d) निःशस्त्रीकरण और विश्व शान्ति
2. भयंकर विनाशकारी आधुनिक शस्त्रास्त्रों के बनाने की प्रेरणा किसने दी ?
   (a) अमेरिका ने
   (b) अमेरिका की विजय ने
   (c) जापान के विनाश ने
   (d) बड़े देशों की पारस्परिक प्रतिस्पर्धा ने
3. एटम बम की अपार शक्ति का प्रथम अनुभव कैसे हुआ ?
   (a) जापान में हुई भयंकर विनाशलीला से
   (b) जापान की अजेय शक्ति की पराजय से
   (c) अमेरिका, रूस, ब्रिटेन और फ्रांस की प्रतिस्पर्धा से
   (d) अमेरिका की विजय से
4. बड़े-बड़े देश आधुनिक विनाशकारी शस्त्रास्त्र क्यों बना रहे हैं ?
   (a) अपनी-अपनी सेनाओं में कमी करने के उद्देश्य से
   (b) अपने संसाधनों का प्रयोग करने के उद्देश्य से
   (c) अपना-अपना सामरिक व्यापार बढ़ाने के उद्देश्य से
   (d) पारस्परिक भय के कारण
5. आधुनिक युद्ध भयंकर व विनाशकारी होते हैं क्योंकि—
   (a) दोनों देशों के शस्त्रास्त्र इन युद्धों में समाप्त हो जाते हैं।
   (b) अधिकांश जनता और उसकी सम्पत्ति नष्ट हो जाती है।
   (c) दोनों देशों में महामारी और भुखमरी फैल जाती है।
   (d) दोनों देशों की सेनाएँ इन युद्धों में मारी जाती हैं।
6. इस गद्यांश का सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक है—
   (a) निःशस्त्रीकरण
   (b) आधुनिक शस्त्रास्त्रों का विनाशकारी प्रभाव
   (c) एटम बम की शक्ति
   (d) आतंक और विश्व-विनाश का भय
7. 'व्यापक विनाश आसन्न दिखाई पड़ता है।' इस वाक्य में 'आसन्न' का अर्थ क्या है ?
   (a) अवश्य घटित होने वाला
   (b) कुछ समय बाद घटित होने वाला
   (c) किसी क्षेत्र विशेष में घटित होने वाला
   (d) कभी घटित नहीं होने वाला

8. 'निःशस्त्रीकरण' से क्या तात्पर्य है ?
   (a) आधुनिक शस्त्रास्त्रों का मुक्त व्यापार
   (b) आधुनिक शस्त्रास्त्रों के परीक्षण, प्रयोग एवं भंडारण पर प्रतिबंध
   (c) एटम की शक्ति का रचनात्मक कार्यों में प्रयोग
   (d) एटम बम का जनता पर प्रयोग न करने का संकल्प
9. निःशस्त्रीकरण की योजनाएँ क्यों बनाई जा रही हैं ?
   (a) क्योंकि आतंक और विश्व के सर्वनाश का भय बढ़ता जा रहा है।
   (b) क्योंकि बड़े देशों के संसाधन समाप्त होते जा रहे हैं।
   (c) क्योंकि तृतीय विश्व युद्ध की अभी कोई सम्भावना नहीं है।
   (d) क्योंकि ये योजनाएँ संयुक्त राष्ट्र संघ ने बनाई हैं।
10. विश्व को सर्वनाश से बचाने के लिए कौन सी योजना सर्वाधिक प्रभावी हो सकती है ?
   (a) एटम शक्ति का नियोजन
   (b) निःशस्त्रीकरण की योजना
   (c) प्रत्येक देश को आधुनिक शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित करने की योजना
   (d) रूस-अमेरिका की मित्रता की योजना

उत्तरमाला

1. (d) 2. (c) 3. (b) 4. (c) 5. (b) 6. (a)
7. (a) 8. (b) 9. (a) 10. (b)

2.

स्वतंत्र व्यवसाय की अर्थनीति के नये वैश्विक वातावरण ने विदेशी पूँजी निवेश को खुली छूट दे रखी है जिसके कारण दूरदर्शन में ऐसे विज्ञापनों की भरमार हो गई है जो उन्मुक्त वासना, हिंसा, अपराध, लालच और ईर्ष्या जैसी मानव की हीनतम प्रवृत्तियों को आधार मानकर चल रहे हैं। अत्यन्त खेद का विषय है कि राष्ट्रीय दूरदर्शन ने भी उनकी भोंडी नकल की ठान ली है। आधुनिकता के नाम पर जो कुछ दिखाया जा रहा है, सुनाया जा रहा है, उससे भारतीय जीवन मूल्यों का दूर का भी रिश्ता नहीं है, वे सत्य से भी कोसों दूर हैं। नयी पीढ़ी जो स्वयं में रचनात्मक गुणों के विकास करने की जगह दूरदर्शन के सामने बैठकर कुछ सीखना, जानना और मनोरंजन करना चाहती है, उसका भगवान ही मालिक है।

जो असत्य है, वह सत्य नहीं हो सकता। समाज को शिव बनाने का प्रयत्न नहीं होगा तो समाज शव बनेगा ही। आज यह मजबूरी हो गई है कि दूरदर्शन पर दिखाये जाने वाले वासनायुक्त अश्लील दृश्यों से चार पीढ़ियाँ एक साथ आँखें चार कर रही हैं। नतीजा सामने है। बलात्कार, अपहरण, छोटी बच्चियों के साथ निकट सम्बन्धियों द्वारा शर्मनाक यौनाचार की घटनाओं में वृद्धि। ठुमक कर चलते शिशु दूरदर्शन पर दिखाये और सुनाये जा रहे स्वर और भंगिमाओं पर अपनी कमर लचकाने लगे हैं। ऐसे कार्यक्रम न शिव हैं, न समाज को शिव बनाने की शक्ति है इनमें। फिर जो शिव नहीं, वह सुन्दर कैसे हो सकता है।

(असिस्टेंट ग्रेड, 1996)

1. उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक होगा—
   (a) पाश्चात्य उपभोक्तावाद और भारतीय दूरदर्शन
   (b) पाश्चात्य जीवन-मूल्यों का प्रचारक भारतीय दूरदर्शन
   (c) भारतीय दूरदर्शन की अनर्थकारी भूमिका
   (d) भारतीय जीवन-मूल्य और दूरदर्शन
2. नयी आर्थिक व्यवस्था से भारतीय दूरदर्शन किस तरह प्रभावित है ?
   (a) हिंसा, यौनाचार, बलात्कार, अपहरण आदि मानव की हीन वृत्तियों से सम्बन्धित कार्यक्रमों का बाहुल्य हो चला है और यह सब पाश्चात्य मीडिया का ही असर है।
   (b) पाश्चात्य मीडिया के प्रभाव के चलते भारतीय दूरदर्शन नये और स्वतन्त्र जीवन-मूल्यों की स्थापना में पूरे जोर से लग गया है।
   (c) पाश्चात्य मीडिया के अनुकरण पर भारतीय दूरदर्शन भी स्त्री-स्वातंत्र्य का प्रचार करने लगा है।
   (d) भारतीय दूरदर्शन के कार्यक्रमों पर पाश्चात्य जीवन शैली का गहरा असर दिखाई देने लगा है।
3. नई आर्थिक नीति का प्रत्यक्ष प्रभाव क्या हो रहा है ?
   (a) विकासशील देश अपनी राष्ट्रीय अस्मिता खोते जा रहे हैं।
   (b) पाश्चात्य जीवन-मूल्यों का विश्व के विकासशील देशों में व्यापक प्रचार हो रहा है।
   (c) उपभोक्तावाद को खुला प्रोत्साहन मिल रहा है।
   (d) विकासशील देश विकसित देशों की आर्थिक गुलामी में फँसते जा रहे हैं।
4. अर्थनीति के नये वैश्विक वातावरण से लेखक का क्या तात्पर्य है ?
   (a) विकासशील देशों का विकसित देशों की आर्थिक गुलामी में फँसना
   (b) अर्थव्यवस्था की दृष्टि से सारे विश्व का एक सूत्र में जुड़ जाना
   (c) आर्थिक नीति में राष्ट्रीय प्रतिबंधों को हटाकर उसका उदारीकरण जिससे कोई देश अन्य किसी देश में व्यवसाय करने, उद्योग लगाने आदि आर्थिक कार्यक्रमों में स्वतंत्र हो
   (d) विकसित देशों के पूँजीपतियों को विकासशील देशों में पूँजी निवेश की स्वतंत्रता
5. 'समाज को शिव बनाने का प्रयत्न नहीं होगा तो समाज शव बनेगा ही'—इस वाक्य से लेखक का क्या तात्पर्य है?
   (a) भारतीय दूरदर्शन अपना दायित्व ईमानदारी से नहीं निभा रहा है।
   (b) वह भारतीय समाज को कल्याण के मार्ग पर न चलाकर श्मशान के मार्ग पर ले जा रहा है।
   (c) वह समाज को नए जीवन्त मूल्यों से अनुप्राणित करने के स्थान पर उसे मुर्दा बनाने में लगा है।
   (d) भारतीय दूरदर्शन अपने 'सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम्' के आदर्श को भूल कर सामाजिक जीवन को विकृत कर रहा है।

उत्तरमाला

1. (c) 2. (a) 3. (b) 4. (c) 5. (d)

3.

सब प्रकार के शासन में—चाहे धर्म-शासन हो, चाहे राजशासन या संप्रदाय-शासन—मनुष्य जाति के भय और लोभ से पूरा काम लिया गया है। दण्ड का भय और अनुग्रह का लोभ दिखाते हुए राज-शासन तथा नरक का भय और स्वर्ग का लोभ दिखाते हुए धर्म-शासन और मत-शासन चलते आ रहे हैं। इनके द्वारा भय-लोभ का प्रवर्तन उचित सीमा के बाहर भी प्रायः हुआ है और होता रहा है। जिस प्रकार शासकवर्ग अपनी रक्षा और स्वार्थसिद्धि के लिए भी इनसे काम लेते आए हैं, उसी प्रकार धर्म-प्रवर्तक और आचार्य अपने स्वरूप-वैचित्र्य की रक्षा और अपने प्रभाव की प्रतिष्ठा के लिए भी। शासन की पहुँच प्रवृत्ति और निवृत्ति के बाहरी व्यवस्था तक ही होती है। उनके मूल या मर्म तक उसकी गति नहीं होती। भीतरी या सच्ची प्रवृत्ति-निवृत्ति को जागृत रखने

वाली शक्ति कविता है, जो धर्म-क्षेत्र में भक्ति-भावना को जगाती रहती है। भक्ति धर्म की रसात्मक अनुभूति है। अपने मंगल और लोक के मंगल का संगम उसी के भीतर दिखाई पड़ता है। इस संगम के लिए प्रकृति के क्षेत्र के बीच मनुष्य को अपने हृदय के प्रसार का अभ्यास करना चाहिए। जिस प्रकार ज्ञान नरसत्ता के प्रसार के लिए है, उसी प्रकार हृदय भी। रागात्मिका वृत्ति के प्रसार के बिना विश्व के साथ जीवन का सामंजस्य घटित नहीं हो सकता। जब मनुष्य के सुख और आनन्द का मेल शेष प्रकृति के सुख-सौंदर्य के साथ हो जाएगा, जब उसकी रक्षा का भाव तृण-गुल्म, वृक्ष-लता, पशु-पक्षी, कीट-पतंग, सबकी रक्षा के भाव के साथ समन्वित हो जाएगा, तब उसके अवतार का उद्देश्य पूर्ण हो जाएगा और वह जगत् का सच्चा प्रतिनिधि हो जाएगा। काव्य-योग की साधना इसी भूमि पर पहुँचाने के लिए है।

(असिस्टेंट ग्रेड, 1997)

1. शासन और कविता की पहुँच में अंतर यह है कि एक व्यक्ति
   (a) को प्रवृत्ति की ओर ले जाता है, दूसरा निवृत्ति की ओर
   (b) के सामाजिक जीवन को प्रभावित करता है, दूसरा धार्मिक जीवन को
   (c) के बाह्य व्यक्तित्व को प्रभावित करता है, दूसरा आंतरिक व्यक्तित्व को
   (d) के भौतिक जीवन को प्रभावित करता है, दूसरा उसके मर्म को आघात पहुँचाता है
2. शासन मनुष्य को इसलिए संचालित कर पाता है, क्योंकि
   (a) मनुष्य स्वभावतः कायर एवं लालची होता है।
   (b) मनुष्य अपना इहलोक और परलोक दोनों बनाना चाहता है।
   (c) लोभ और भय मनुष्य की वे कमजोरियाँ हैं जो सभी में समान रूप से पाई जाती हैं।
   (d) मनुष्य इहलोक में रहते हुए ही अपना परलोक भी बनाना चाहता है।
3. रेखांकित पंक्ति से लेखक का आशय है कि भक्ति
   (a) धर्म का वह स्वरूप है जो व्यक्ति को चिरकाल तक आनन्द में डुबोए रहता है।
   (b) वह अनुभूति है जिसमें धर्म जैसा शुष्क विषय भी आनन्ददायक बन जाता है।
   (c) धर्म का वह स्वरूप है जिसके आचरण में व्यक्ति सदैव आनंद का अनुभव करता है।
   (d) ऐसी विचार धारा है जो व्यक्ति को सदैव आनंदमग्न रखती है।
4. मनुष्य संसार के साथ तभी सामंजस्य स्थापित कर सकता है जब
   (a) वह अपने भाव-क्षेत्र में सम्पूर्ण विश्व को समाविष्ट कर ले।
   (b) वह सम्पूर्ण जगत् के साथ प्रेम-भाव की स्थिति में आ जाए।
   (c) व्यक्ति अपने जीवन का सामंजस्य प्रकृति और पशु-पक्षी जगत् के साथ भी कर ले।
   (d) सृष्टि स्वयं को उसके सुख में सुखी और दुःख में दुःखी अनुभव करे।
5. मनुष्य की काव्य योग साधना तब पूरी होगी जब वह
   (a) जगत् का सच्चा प्रतिनिधि हो जाएगा।
   (b) भावात्मक दृष्टि से प्रकृति के साथ अभेद की स्थिति में आ जाएगा।
   (c) जड़-चेतन संसार के सुख में अपना सुख मानने लगेगा।
   (d) प्राकृतिक उपादानों की रक्षा का दायित्व अपने ऊपर समझने लगेगा।

उत्तरमाला

1. (c) 2. (c) 3. (b) 4. (b) 5. (d)

4.

हमारे इतिहास के अध्ययन ने हमें यह दर्शाया है कि जीवन प्रायः बहुत क्रूर तथा कठोर है। इसके लिए उत्तेजित होना या लोगों को पूरी तरह दोषी ठहराना मूर्खता है और उसका कोई लाभ नहीं। गरीबी, दुःख और शोषण के कारणों को समझने और उनको दूर करने के प्रयत्नों में ही समझदारी है। यदि हम ऐसा करने में असफल हो जाते हैं और घटनाओं की दौड़ में पीछे रह जाते हैं, तो हम अवश्य कष्ट पाते हैं। भारत इस तरह से पीछे रह गया। यह कुछ प्राचीन रह गया। इसके समाज ने पुरातन परम्परा को धारण कर लिया, इसके सामाजिक ढाँचे ने अपने जीवन और शक्ति को खो दिया और यह निष्क्रिय होने लगा। यह आश्चर्यजनक नहीं है कि भारत ने कष्ट पाया। अंग्रेज इसका कारण रहे हैं। यदि अंग्रेज ऐसा न करते, तो शायद कोई और लोग ऐसा ही करते ।

परन्तु अंग्रेजों ने भारत का एक बहुत बड़ा हित किया। उनके नए और हृष्ट-पुष्ट जीवन के प्रभाव ने भारत को हिला दिया और उनमें राजनीतिक एकता और राष्ट्रीयता की भावना जागृत हो गई। शायद यह बड़ा दुःखदायी था कि हमारे प्राचीन देश और लोगों में नवजीवन लाने की आवश्यकता थी। अंग्रेजी शिक्षा का उद्देश्य केवल क्लर्क बनाना और तत्कालीन पश्चिमी विचारों से लोगों को परिचित कराना था। एक नया वर्ग बनने लगा, अंग्रेजी शिक्षित वर्ग, संख्या में कम और लोगों से कटा हुआ, परन्तु जिसके भाग्य में नए राष्ट्रीय आन्दोलन का नेतृत्व था। यह वर्ग पहले इंग्लैण्ड और अंग्रेजी स्वतंत्रता के विचारों का पूरी तरह प्रशंसक था। तब ही लोग स्वतंत्रता और प्रजातंत्र के बारे में बातें कर रहे थे। यह सब अनिश्चित था और इंग्लैण्ड भारत में अपने लाभ के लिए निरंकुशता से राज्य कर रहा था, परन्तु यह आशा की जाती थी कि इंग्लैण्ड ठीक समय पर भारत को स्वतन्त्रता दे देगा।

भारत में पश्चिमी विचारों का प्रभाव हिन्दू धर्म पर भी कुछ सीमा तक पड़ा। जनसमूह तो प्रभावित नहीं हुआ, परन्तु जैसा मैं तुम्हें बता चुका हूँ, ब्रिटिश सरकार की नीति ने रूढ़िवादी लोगों की वास्तव में सहायता की, परन्तु नया मध्यम वर्ग जो अभी बन रहा था, जिसमें सरकारी कर्मचारी और व्यावसायिक लोग थे, प्रभावित हो गए थे। उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भ में पश्चिमी तरीकों से हिन्दू धर्म में सुधार लाने का प्रयत्न बंगाल में हुआ। हिन्दू धर्म के अनगिनत सुधारक अतीत में थे। इनमें से कुछ का उल्लेख मैं तुम्हें अपने इन पत्रों में कर चुका हूँ, परन्तु नया प्रयत्न निश्चय ही ईसाईवाद और पश्चिमी विचारों से प्रभावित था। इस प्रयत्न के निर्माता राजा राममोहन राय थे, एक महान व्यक्ति और एक महान विद्वान् जिसका नाम हम पहले ही सती प्रथा की समाप्ति के सम्बन्ध में ले चुके हैं। वे संस्कृत, अरबी और दूसरी कई भाषाएँ बहुत अच्छी तरह जानते थे और उन्होंने ध्यान से कई धर्मों का अध्ययन किया था। वे धार्मिक समारोह और पूजा आदि के विरुद्ध थे और उन्होंने समाज सुधार और स्त्री शिक्षा का समर्थन किया। जिस समाज की उन्होंने स्थापना की वह ब्रह्मो समाज कहलाया।

(यू० जी० सी०, 1998)

1. इस अवतरण से लेखक के विषय में यह पता चलता है कि
   (a) भारत की समस्याओं के लिए वह विदेशी शासकों को दोषी ठहराता है।
   (b) वह भारत पर ब्रिटिश प्रभाव का परीक्षण निष्पक्षता से करता है।

(c) लेखक ने बहुत से वर्ष इंग्लैण्ड में बिताये हैं और भारत की तरफ उसकी अरुचि विकसित हो गई है।
(d) वह हिन्दू धर्म का सच्चा अनुयायी है।

2. लेखक कहता है कि पश्चिमी विचारों ने मार्ग प्रशस्त किया है—
(a) जनसमूह में निराशा का
(b) भारतीयों में अधिक निरक्षरता का
(c) मध्यम वर्ग के लोगों की ओर से विद्रोह का
(d) हिन्दू धर्म में सुधार का

3. यह अंग्रेजों द्वारा भारत को दिए गए महान् लाभों में से एक नहीं है।
(a) यह राजनीतिक एकता की भावना लाया।
(b) अंग्रेजी शिक्षा भारतीयों की तत्कालीन पश्चिमी विचारधारा के सम्पर्क में लायी।
(c) एक नए शिक्षित मध्यम वर्ग का जन्म हुआ।
(d) इसने रूढ़िवादिता और अन्धविश्वास को बढ़ावा दिया।

4. राजा राममोहन राय के व्यक्तित्व की पहचान की जाती थी—
(a) संस्कृत और अरबी की एक छात्रवृत्ति से
(b) विभिन्न धर्मों के समीकरण से
(c) पश्चिमी विचार के प्रकारों की एक निष्ठावान नकल से
(d) ईसाई धर्म के अधिकतम प्रभाव से

उत्तरमाला

1. (b) 2. (d) 3. (d) 4. (b)

5.

संस्कृति और सभ्यता—ये दो शब्द हैं और उनके अर्थ भी अलग-अलग हैं। सभ्यता मनुष्य का वह गुण है जिससे वह अपनी बाहरी तरक्की करता है। संस्कृति वह गुण है जिससे वह अपनी भीतरी उन्नति करता है, करुणा, प्रेम और परोपकार सीखता है। आज रेलगाड़ी, मोटर और हवाई जहाज, लम्बी-चौड़ी सड़कें और बड़े-बड़े मकान, अच्छा भोजन और अच्छी पोशाक, ये सभ्यता की पहचान हैं और जिस देश में इनकी जितनी ही अधिकता है उस देश को हम उतना ही सभ्य मानते हैं। मगर संस्कृति उन सबसे कहीं बारीक चीज है। वह मोटर नहीं, मोटर बनाने की कला है; मकान नहीं, मकान बनाने की रुचि है। संस्कृति धन नहीं, गुण है। संस्कृति ठाठ-बाट नहीं, विनय और विनम्रता है। एक कहावत है कि सभ्यता वह चीज है जो हमारे पास है, लेकिन संस्कृति वह गुण है जो हममें छिपा हुआ है। हमारे पास घर होता है, कपड़े-लत्ते होते हैं, मगर ये सारी चीजें हमारी सभ्यता के सबूत हैं, जबकि संस्कृति इतने मोटे तौर पर दिखलाई नहीं देती, वह बहुत ही सूक्ष्म और महान चीज है और वह हमारी हर पसंद, हर आदत में छिपी रहती है। मकान बनाना सभ्यता का काम है, लेकिन हम मकान का कौन-सा नक्शा पसंद करते हैं—यह हमारी संस्कृति बतलाती है। आदमी के भीतर काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह और मत्सर ये छः विकार प्रकृति के दिए हुए हैं। मगर ये विकार अगर बेरोक छोड़ दिए जायें, तो आदमी इतना गिर जाए कि उसमें और जानवर में कोई भेद नहीं रह जाये। इसलिए आदमी इन विकारों पर रोक लगाता है। इन दुर्गुणों पर जो आदमी जितना ज्यादा काबू कर पाता है, उसकी संस्कृति भी उतनी ही ऊँची समझी जाती है। संस्कृति का स्वभाव है कि वह आदान-प्रदान से बढ़ती है। जब दो देशों या जातियों के लोग आपस में मिलते हैं तब उन दोनों की संस्कृतियाँ एक-दूसरे को प्रभावित करती हैं। इसलिए संस्कृति की दृष्टि से वह जाति या वह देश बहुत ही धनी समझा जाता है जिसने ज्यादा-से-ज्यादा देशों या जातियों की संस्कृतियों से लाभ उठाकर अपनी संस्कृति का विकास किया हो।

(अनुवादक परीक्षा, 1999)

1. 'सभ्यता' का अभिप्राय है—
(a) मानव को कलाकार बना देने वाली विशेषता
(b) मानव के भौतिक विकास का विधायक गुण
(c) मनुष्य के स्वाधीन चिंतन की गाथा
(d) युग-युग की ऐश्वर्यपूर्ण कहानी

2. 'संस्कृति' का अभिप्राय है—
(a) हर युग में प्रासंगिक विशिष्टता
(b) विशिष्ट जीवन-दर्शन से सन्तुलित जीवन
(c) आनन्द मनाने का एक विशेष विधान
(d) मानव की आत्मिक उन्नति का संवर्धक आन्तरिक गुण

3. संस्कृति सभ्यता से इस रूप में भी भिन्न है कि संस्कृति—
(a) सभ्यता की अपेक्षा स्थूल और विशद होती है।
(b) एक आदर्श विधान है और सभ्यता यथार्थ होती है।
(c) सभ्यता की अपेक्षा अत्यन्त सूक्ष्म होती है।
(d) समन्वयमूलक है और सभ्यता नितान्त मौलिक होती है।

4. संस्कृति का मूल स्वभाव है कि वह—
(a) मानव-मानव में भेदभाव नहीं रखती।
(b) मनुष्य की आत्मा में विश्वास रखती है।
(c) आदान-प्रदान से बढ़ती है।
(d) एक समुदाय के जीवन में ही जीवित रह सकती है।

5. मानव की मानवीयता इसी बात में निहित है कि वह—
(a) अपनी सभ्यता और संस्कृति का प्रचार करे।
(b) अपनी संस्कृति को समृद्ध करने के लिए कटिबद्ध रहे।
(c) सभ्यता की ऊँचाइयों को पाने का प्रयास करे।
(d) अपने मन से विद्यमान विकारों पर नियंत्रण पाने की चेष्टा करे।

उत्तरमाला

1. (b) 2. (d) 3. (c) 4. (c) 5. (d)

6.

पश्चिम की प्रौद्योगिकी और पूरब की धर्मचेतना का सर्वश्रेष्ठ लेकर ही नई मानव संस्कृति का निर्माण सम्भव है। पश्चिम नया धर्म चाहता है, पूरब नया ज्ञान। दोनों की अपनी-अपनी आवश्यकता है। वहाँ यन्त्र है, मन्त्र नहीं। यहाँ मन्त्र है, यन्त्र नहीं। वहाँ भौतिक सम्पन्नता है, यहाँ आध्यात्मिक सम्पन्नता है। पश्चिम के आध्यात्मक दैन्य को दूर करने में पूरब की मैत्री, करुणा और अहिंसा के सन्देश महत्वपूर्ण होंगे तो पूरब के भौतिक दैन्य को पश्चिम की प्रौद्योगिकी दूर करेगी। पूरब-पश्चिम के मिलन से ही मनुष्य की देह और आत्मा को एक साथ चरितार्थता मिलेगी। इसमें प्रौद्योगिकी जड़ता के बंधनों से मुक्त होगी और पूरब का अध्यात्मवाद, परलोकवाद तथा निष्क्रियतावाद से छुटकारा पाएगा। भाग्यवाद को प्रौद्योगिकी को सौंपकर हम मनुष्य की कर्मण्यता को चरितार्थ करेंगे और इस धरती के जीवन को स्वर्गोपम बनाएंगे। जीवन से भाग करके नहीं, उसके भीतर से ही हमें लोकमंगल की साधना करनी होगी। विरक्तिमूलक आध्यात्मिकता का स्थान लोकमांगलिक आध्यात्मिकता लेगी। यह आध्यात्मिकता लोकमंगल और लोकसेवा में ही चरितार्थता पाएगी। मनुष्य मात्र के दुःख उत्पीड़न और अभाव के प्रति संवेदित और क्रियाशील होकर हम अपनी आध्यात्मिकता को प्राणवान, जीवन्त और सार्थक बना सकेंगे। ज्ञान को शक्ति में नहीं, परमार्थ तथा उत्सर्ग में ढालकर ही हम मानवता को उजागर करेंगे। प्रकृति से हमने जो कुछ पाया है, उसे हम बलात् छीनी हुई वस्तु क्यों मानें? क्यों न हम यह स्वीकार करें कि प्रकृति ने अपने अक्षय भण्डार को मानव-मात्र के लिए अनावृत्त कर रखा है? प्रकृति के प्र

प्रतियोगिता या प्रतिस्पर्धा का भाव क्यों रखा जाए ? वस्तुतः प्रकृति के प्रति सहयोगी, कृतज्ञ तथा सदाशय होकर ही मनुष्य अपनी भीतरी प्रकृति को राग-द्वेष से मुक्त करता है और स्पर्धा को प्रेम में बदलता है। आज आणविक प्रौद्योगिकी को मानव कल्याण का साधन बनाने की अत्यन्त आवश्यकता है। यह तभी सम्भव है जब मनुष्य की बौद्धिकता के साथ-साथ उसकी रागात्मकता का विकास हो। रवीन्द्र और गाँधी का यही सन्देश है। 'कामायनी' के रचयिता जयशंकर प्रसाद ने श्रद्धा और इड़ा के समन्वय पर बल दिया है। मानवता की रक्षा और उसके विकास के लिए पूरब-पश्चिम का सम्मिलन आवश्यक है। तभी कवि पन्त का यह कथन चरितार्थ हो सकेगा—

'मानव तुम सबसे सुन्दरतम'। *(अनुवादक परीक्षा, 2000)*

1. उपरिलिखित अवतरण का सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक हो सकता है—
   (a) पूरब-पश्चिम का सम्मिलन
   (b) मानव-उत्पीड़न से मुक्ति
   (c) पूरब पूरब है पश्चिम पश्चिम है
   (d) मानव तुम सबसे सुन्दरतम्
2. मनुष्य का एक साथ दैहिक और आत्मिक विकास निम्नांकित कथन की क्रियान्विति से ही सम्भव है—
   (a) पूँजीवाद और साम्यवाद के समन्वय से
   (b) पूरब और पश्चिम के समन्वय से
   (c) तन्त्र और मन्त्र के समन्वय से
   (d) लोक और परलोक के समन्वय से
3. पश्चिम के पास अभाव है—
   (a) आध्यात्मिक सम्पदा का
   (b) भौतिक सुख-सुविधाओं का
   (c) यान्त्रिक सभ्यता का
   (d) वैज्ञानिक प्रगति का
4. प्रकृति के प्रति श्रेयस्कर है मनुष्य का—
   (a) रागात्मक भाव (b) कृतज्ञता भाव
   (c) स्पर्धा भाव (d) असूया भाव
5. भौतिक साधन विपन्नता से मुक्ति के लिए आज अनिवार्य है—
   (a) आणविक शस्त्रास्त्रों का निर्माण
   (b) परलोकवादी विचारधारा का त्याग
   (c) पश्चिमी सभ्यता का अनुकरण
   (d) प्रौद्योगिकी का ग्रहण
6. मनुष्य मात्र के दुःखों एवं अभावों के प्रति संवेदनशीलता से सप्राण एवं सार्थक बन सकती है हमारी—
   (a) प्रौद्योगिकी क्षेत्र की प्रगति (b) प्रकृति से प्रतिस्पर्धा
   (c) आध्यात्मिकता (d) भौतिक सम्पन्नता
7. वर्तमान युग में अध्यात्मवाद सार्थकता प्राप्त कर सकता है—
   (a) लोकहित भावना से सम्पन्न होकर
   (b) प्रकृति पर विजयी होकर
   (c) जीवन से पलायन करके
   (d) विरक्तिमूलक अध्यात्म को अपना करके
8. मैत्री, करुणा और अहिंसा को अपनाने से दूर होने की सम्भावना है—
   (a) प्राच्य भौतिकवाद के दैन्य की
   (b) पश्चिमी भौतिकवाद की विपन्नता की
   (c) पश्चिमी अध्यात्मवाद की विपन्नता की
   (d) पूर्वी अध्यात्मवाद की विपन्नता की
9. पश्चिम की प्रौद्योगिकी और पूरब की धर्म-चेतना का समन्वय आवश्यक है—
   (a) प्रौद्योगिकी और अध्यात्म के समन्वय के लिए
   (b) यान्त्रिकता और प्रौद्योगिकी के विकास के लिए
   (c) मानवता की रक्षा और विकास के लिए
   (d) बौद्धिकता और रागात्मकता के समन्वय के लिए
10. श्रद्धा और इड़ा के समन्वय से कवि का अभिप्रेत है—
   (a) भौतिकी और रसायन का
   (b) रागात्मकता और बौद्धिकता का
   (c) रागात्मकता और विरागात्मकता का
   (d) सहृदयता और कर्मठता का

उत्तरमाला

1. (a) 2. (b) 3. (a) 4. (b) 5. (d) 6. (c) 7. (a) 8. (b) 9. (c) 10. (b)

7.

लन्दन शहर टेम्स नदी के किनारे पर बसा हुआ है, जिसका पाट चौड़ा है और पानी गहरा। समुद्र तट के निकट होने और टेम्स नदी में काफी पानी रहने के कारण, लन्दन एक विशाल बन्दरगाह भी है। वहाँ रोज सैकड़ों जहाज आते-जाते हैं और दूर से देखने पर टेम्स नदी के ऊपर मस्तूलों का जंगल मालूम होता है। यहाँ से पृथ्वी की सभी दिशाओं को माल जाता है और वहाँ से आता है। लन्दन तथा इंगलिस्तान की भोजन सामग्री का बहुत भाग इसी बन्दरगाह पर पहुँचता है। यदि एक सप्ताह के लिए जहाजों का आना-जाना बन्द हो जाए तो इस देश में त्राहि-त्राहि मच जाए। इसलिए ब्रिटिश साम्राज्य ने अपनी नाविक शक्ति इतनी प्रबल कर ली है कि उससे दुनिया में कोई भी राज्यशक्ति समुद्री युद्ध में टक्कर नहीं ले सकती। *(रेलवे, 2001)*

1. ब्रिटिश साम्राज्य ने अपनी नाविक शक्ति क्यों इतनी प्रबल बना ली ?
   (a) कोई शत्रु इसे हरा न सके
   (b) कोई लन्दन पर आक्रमण न कर सके
   (c) कोई इसके जहाजों का आना-जाना न रोक सके
   (d) लन्दन शहर को कोई क्षति न पहुँच सके
2. मस्तूलों का जंगल कहने से लेखक का क्या अभिप्राय है ?
   (a) मस्तूलों की पंक्तियाँ (b) असंख्य मस्तूल
   (c) मस्तूलों का आकर्षक दृश्य (d) मस्तूलों की बहार
3. 'त्राहि-त्राहि मच जाने' का क्या अर्थ है ?
   (a) हल्ला मच जाना (b) हल्ला-गुल्ला आरम्भ होना
   (c) शोर-शराबा होना (d) हाहाकार मच जाना
4. 'टक्कर लेने' का अर्थ है—
   (a) तुलना करना (b) मुकाबला करना
   (c) टकराना (d) लोहा मानना
5. लन्दन बन्दरगाह कहाँ पर स्थित है ?
   (a) समुद्र तट पर (b) काफी गहरे पानी पर
   (c) जहाजों के जंगल में (d) नदी के तट पर

उत्तरमाला

1. (c) 2. (b) 3. (d) 4. (b) 5. (d)

8.

निकम्मे रहकर मनुष्यों की चिन्तन-शक्ति थक गई है। बिस्तरों और आसनों पर सोते-सोते मन के घोड़े हार गए हैं। सारा जीवन-रस निचुड़ चुका है। स्वप्न पुराने हो चुके हैं। आजकल कविता में नयापन नहीं। उसमें पुराने जमाने की पुनरावृत्ति मात्र है। इस नकल में असल की पवित्रता का अभाव है। अब तो

एक नए प्रकार का कलाकौशलपूर्ण संगीत साहित्य संसार में प्रचलित होने वाला है। यदि वह न प्रचलित हुआ तो मशीनों के पहियों के नीचे दबकर हमें मरा समझिये। यह नया साहित्य मजदूरों के हृदय से निकलेगा। उन मजदूरों के कंठ से यह नई कविता निकलेगी जो अपने जीवन आनन्द के साथ खेत की मेड़ों का, कपड़ों के धागों का , जूते के टांकों का, लकड़ी के रंगों का भेदभाव दूर करेंगे। नंगे सिर और पाँव, धूल से पिटे और कीचड़ से रंगे हुए वे बेजुबान कवि जब जंगल में लकड़ी काटेंगे तब लकड़ी काटने के शब्द इनके असभ्य स्वरों से मिश्रित होकर वायुयान पर चढ़ दसों दिशाओं में ऐसा अद्भुत गान करेगा कि भविष्य के कलावन्तों के लिए वही ध्रुपद और मल्हार का काम देगा। कला रूपी धर्म की तभी वृद्धि होगी, तभी नए कवि पैदा होंगे, तभी नए औलियों का उद्भव होगा। परन्तु ये सब के सब मजदूरी के दूध से पलेंगे। शुद्धाचरण, सभ्यता और कविता आदि के फूल इन्हीं ऋषियों के उद्यान में प्रफुल्लित होंगे। *(रेलवे, 2002)*

1. कविता में नवीन विषयों के अभाव का मुख्य कारण यह है कि
   (a) मनुष्य का सारा जीवन-रस निचुड़ चुका है, स्वप्न पुराने हो चुके हैं।
   (b) श्रमहीनता की स्थिति ने मनुष्य की चिन्तन-शक्ति क्षीण कर दी है।
   (c) मनुष्य ने नवीन विषयों पर विचार करना बन्द कर दिया है।
   (d) मनुष्य ने नवीन कल्पनाएं करनी बन्द कर दी है।
2. यदि संगीत नवीन साहित्य संसार में प्रचलित नहीं हुआ तो मनुष्य—
   (a) नवीन कला-कौशलपूर्ण संगीत से वंचित रह जाएगा।
   (b) भौतिकता के आधिक्य के कारण भावहीन हो जाएगा।
   (c) भविष्य में कभी साहित्यिक प्रगति न कर पाएगा।
   (d) मशीनों का गुलाम बनकर रह जाएगा।
3. नवीन साहित्य का प्रमुख विषय होगा—
   (a) श्रमजीवियों के कण्ठ से निकला राग
   (b) मजदूरों के जीवन में बिखरा आनन्द
   (c) आम आदमी के श्रमपूर्ण जीवन
   (d) खेत की मेड़, कपड़े के धागे, जूते के टाँके और लकड़ी के रंग
4. मजदूर बेजुबान रहकर भी कविता कर सकता है—
   (a) औजारों से निकलने वाले संगीत के माध्यम से
   (b) भविष्य के कलावंतों को नवीन दृष्टि प्रदान करके
   (c) नवीन साहित्य के विषय-रूप में प्रतिष्ठित होकर
   (d) अपनी भावनाओं की लिखित अभिव्यक्ति के माध्यम से
5. आधुनिक युग में लिखी जा रही कविता में नयापन नहीं है क्योंकि इसमें—
   (a) असली काव्य की पवित्रता का अभाव है।
   (b) नई कला-कौशलपूर्ण अभिव्यक्ति को स्थान नहीं मिला है।
   (c) परम्परागत मूल्यों की अवधारणा नहीं है।
   (d) नवीन भावों की अभिव्यक्ति नहीं मिल रही है।

उत्तरमाला

1. (d) 2. (d) 3. (b) 4. (a) 5. (d)

9.

ज़िन्दगी के असली मजे उनके लिए नहीं हैं जो फूलों की छाँह के नीचे खेलते और सोते हैं, बल्कि फूलों की छाँह के नीचे अगर जीवन का कोई स्वाद छिपा है, तो वह भी उन्हीं के लिए है जो दूर रेगिस्तान से आ रहे हैं जिनका कंठ सूखा हुआ है, ओठ फटे हुए और सारा बदन पसीने से तर है। पानी में जो अमृतवाला तत्व है, उसे वह जानता है जो धूप में खूब सूख चुका है, वह नहीं जो रेगिस्तान में कभी पड़ा ही नहीं है। *(अध्यापक भर्ती परीक्षा, 2003)*

1. यह गद्यांश किसका लिखा हुआ है ?
   (a) रामधारी सिंह 'दिनकर' (b) रामचन्द्र शुक्ल
   (c) गुलाब राय (d) बालमुकुन्द गुप्त
2. ज़िन्दगी के असली मजे किनके लिए है ?
   (a) जो आराम करते हैं (b) जो परिश्रम करते हैं
   (c) जो शहर में रहते हैं (d) जो पैसे वाले है
3. उपर्युक्त गद्यांश में किस बात के महत्व को बताया गया है?
   (a) प्रकृति (b) जीवन (c) श्रम (d) भाग्य
4. जो धूप में खूब सूख चुका है, से अभिप्राय है—
   (a) कड़ा परिश्रम करना (b) धूप सेंकना
   (c) बीमार होना (d) रेगिस्तान में रहना
5. 'अमृतवाला तत्व' का तात्पर्य है—
   (a) जीवन का सार (b) अमृत
   (c) जीवन का रहस्य (d) समुद्र से निकलाहुआ अमृत

उत्तरमाला

1. (a) 2. (b) 3. (c) 4. (a) 5. (a)

10.

भूषण महाराज ने विषय और विशेषतया नायक चुनने में बड़ी बुद्धिमता से काम लिया है। शिवाजी और छत्रसाल से महानुभावों के पवित्र चरित्रों का वर्णन करने वाले की जितनी प्रशंसा की जाए थोड़ी है। शिवाजी ने एक जमींदार और बीजापुराधीश के नौकर के पुत्र होकर चक्रवर्ती राज्य स्थापित करने की इच्छा को पूर्ण-सा कर दिखाया और छत्रसाल बुन्देला ने जिस समय मुगलों का सामना करने का साहस किया उस समय उसके पास केवल पाँच सवार और पच्चीस पैदल थे। इसी सेना से इस महानुभाव ने दिल्ली का सामना करने की हिम्मत की और मरते समय अपने उत्तराधिकारियों के लिए दो करोड़ वार्षिक मुनाफे का स्वतंत्र राज्य छोड़ा। *(टी० जी० टी०, 2004)*

1. महाकवि भूषण दरबारी कवि थे, उनके आश्रयदाता राजा का नाम था—
   (a) शिवाजी (b) छत्रसाल
   (c) औरंगजेब (d) वीर सिंह जूदेव
2. छत्रपति शिवाजी की प्रशस्ति में लिखे गये दो काव्य ग्रंथों के नाम हैं—
   (a) शिवा बावनी, शिवराज भूषण
   (b) शिवा चरित, शिवा विलास
   (c) शिवा वैभव, शिवा चिन्तन
   (d) शिव कथा, शिवा विक्रम
3. इस गद्यांश का सार्थक शीर्षक हो सकता है—
   (a) भूषण विवेक (b) भूषण की बुद्धिमत्ता
   (c) भूषण की कला
   (d) भूषण का काव्यनायक चयन
4. छत्रसाल बुन्देला ने जिस समय मुगलों का सामना किया, उस समय उनके पास थे—
   (a) दो सवार और पाँच पैदल
   (b) पाँच सवार और पच्चीस पैदल
   (c) पच्चीस सवार और दो पैदल
   (d) पच्चीस सवार और पाँच पैदल
5. भूषण का प्रिय काव्य रस था—
   (a) करुण (b) शान्त (c) वीर (d) शृंगार

उत्तरमाला

1. (a) 2. (a) 3. (b) 4. (b) 5. (c)

11.

वास्तव में हृदय वही है जो कोमल भावों और स्वदेश प्रेम से ओतप्रोत हो। प्रत्येक देशवासी को अपने वतन से प्रेम होता है, चाहे उसका देश सूखा, गर्म या दलदलों से युक्त हो। देश-प्रेम के लिए किसी आकर्षण की आवश्यकता नहीं होती, बल्कि वह तो अपनी भूमि के प्रति मनुष्य मात्र की स्वाभाविक ममता है। मानव ही नहीं पशु-पक्षियों तक को अपना देश प्यारा होता है। संध्या समय पक्षी अपने नीड़ की ओर उड़े चले जाते हैं। देश-प्रेम का अंकुर सभी में विद्यमान है। कुछ लोग समझते हैं कि मातृ भूमि के नारे लगाने से ही देश-प्रेम व्यक्त होता है। दिन-भर वे त्याग, बलिदान और वीरता की कथा सुनाते नहीं थकते, लेकिन परीक्षा की घड़ी आने पर भाग खड़े होते हैं। ऐसे लोग स्वार्थ त्यागकर, जान जोखिम में डालकर देश की सेवा क्या करेंगे ? आज ऐसे लोगों की आवश्यकता नहीं है।*(अनुवादक परीक्षा, 2005)*

1. देश-प्रेम का अंकुर विद्यमान है—
   (a) सभी मानवों में (b) सभी प्राणियों में
   (c) सभी पक्षियों में (d) सभी पशुओं में
2. सच्चा देश-प्रेमी—
   (a) वीर सपूतों की कहानियाँ सुनाता है।
   (b) मातृभूमि का जयघोष करता है।
   (c) परीक्षा की कसौटी पर खरा उतरता है।
   (d) अपनी भूमि देश के लिए दान कर देता है।
3. देश-प्रेम का अभिप्राय है—
   (a) देश के प्रति कोमल भावों का उदय
   (b) अनथक प्रयत्न करके देश का निर्माण करना
   (c) देशहित के लिए शत्रु से संघर्ष करना
   (d) देश के प्रति व्यक्ति का स्वाभाविक ममत्व
4. संध्या समय पक्षी अपने घोंसलों में वापस चले जाते हैं, क्योंकि—
   (a) दिन-भर घूमकर वे थक जाते हैं।
   (b) उन्हें रात को आराम करना है।
   (c) जानवर भी अपने निवास-स्थान को चले जाते हैं।
   (d) उन्हें अपना नीड़ प्यारा होता है।
5. वही देश महान् है जहाँ के लोग—
   (a) शिक्षित और प्रशिक्षित हैं।
   (b) बेरोजगार तथा निरुद्यमी नहीं है।
   (c) कृषि और व्यापार से धनार्जन करते हैं।
   (d) त्याग और उत्सर्ग में सदा आगे रहते हैं।

उत्तरमाला

1. (b) 2. (c) 3. (d) 4. (d) 5. (d)

12.

आवश्यकता इस बात की है कि हमारी शिक्षा का माध्यम भारतीय भाषा हो, जिसमें राष्ट्र के हृदय-मन-प्राण के सूक्ष्मतम और गम्भीरतम संवेदन मुखरित हों और हमारा पाठ्यक्रम यूरोप तथा अमेरिका के पाठ्यक्रम पर आधरित न होकर हमारी अपनी सांस्कृतिक परम्पराओं एवं आवश्यकताओं का प्रतिनिधित्व करे। भारतीय भाषाओं, भारतीय इतिहास, भारतीय दर्शन, भारतीय धर्म और भारतीय समाजशास्त्र को हम सर्वोपरि स्थान दें। उन्हें अपने शिक्षाक्रम में गौण स्थान देकर या शिक्षित जन को उनसे वंचित रखकर हमने राष्ट्रीय संस्कृति में एक महान् रिक्ति को जन्म दिया है, जो नयी पीढ़ी को भीतर से खोखला कर रहा है। हम राष्ट्रीय परम्परा से ही नहीं, सामयिक जीवन प्रवाह से भी दूर जा पड़े हैं। विदेशी पश्चिमी चश्मों के भीतर से देखने पर अपने घर के प्राणी भी बे-पहचाने और अजीब से लगने लगे हैं। शिक्षित जन और सामान्य जनता के बीच खाई बढ़ती गई है और विश्व संस्कृति के दावेदार होने का दम्भ करते हुए भी हम घर में वामन ही बने रह गए हैं। इस स्थिाति को हास्यास्पद ही कहा जा सकता है।

1. उपर्युक्त गद्यांश का सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक है—
   (a) हमारा शिक्षा-माध्यम और पाठ्यक्रम
   (b) शिक्षित जन और सामान्य जनता
   (c) हमारी सांस्कृतिक परम्परा
   (d) शिक्षा का माध्यम
2. हमारी शिक्षा का माध्यम भारतीय भाषा इसलिए होना चाहिए क्योंकि उसमें—
   (a) विदेशी पाठ्यक्रम का अभाव होता है।
   (b) भारतीय इतिहास और भारतीय दर्शन का ज्ञान निहित होता है।
   (c) सामयिक जीवन निरन्तर प्रवाहित होता रहता है।
   (d) भारतीय मानस का स्पन्दन ध्वनित होता है।
3. हमारी शिक्षा में ऐसे पाठ्यक्रम की आवश्यकता है जिसमें
   (a) सामयिक जन-संस्कृति का समावेश हो।
   (b) भारतीय सांस्कृतिक परम्परा का प्रतिनिधित्व हो ।
   (c) पाश्चात्य संस्कृति का पूर्ण ज्ञान कराने की क्षमता हो।
   (d) आधुनिक वैज्ञानिक विचारधाराओं का सन्निवेश हो।
4. हमें राष्ट्रीय सांस्कृतिक परम्परा के साथ-साथ जुड़ना चाहिए—
   (a) सामयिक जीवन-प्रवाह से
   (b) समसामयिक वैज्ञानिक विचारधारा से
   (c) अद्यतन साहित्यिक परम्परा से
   (d) भारतीय नव्य समाजशास्त्र से
5. शिक्षित जन और सामान्य जनता में निरन्तर अन्तर बढ़ने का कारण है कि हम—
   (a) भारतीय समाजशास्त्र को सर्वोपरि स्थान नहीं देते।
   (b) विदेशी चश्मे लगाकर अपने लोगों को देखते हैं।
   (c) भारतीय भाषाओं का अध्ययन नहीं करते।
   (d) नई पीढ़ी को भीतर से खोखला कर रहे हैं।

उत्तरमाला

1. (a) 2. (d) 3. (b) 4. (d) 5. (b)

13.

सच्चे वीर अपने प्रेम के जोर से लोगों को सदा के लिए बाँध देते हैं। वीरता की अभिव्यक्ति कई प्रकार से होती है, कभी लड़ने-मरने से, खून बहाने से, तोप तलवार के सामने बलिदान करने से होती है, तो कभी जीवन के गूढ़ तत्व और सत्य की तलाश में बुद्ध जैसे राजा विरक्त होकर वीर हो जाते हैं। वीरता एक प्रकार की अन्तः प्रेरणा है जब कभी उसका विकास हुआ तभी एक रौनक, एक रंग, एक बहार संसार में छा गई। वीरता हमेशा निराली और नई होती है। वीरों को बनाने के कारखाने नहीं होते। वे तो देवदार के वृक्ष की भाँति जीवन रूपी वन में स्वयं पैदा होते हैं और बिना किसी के पानी दिये, बिना किसी के दूध पिलाये बढ़ते हैं। ''जीवन के केन्द्र में निवास करो और सत्य की चट्टान पर दृढ़ता से खड़े हो जाओ। बाहर की सतह छोड़कर जीवन के अन्दर की तहों में पहुँचें तब नये रंग खिलेंगे।'' यही वीरता का संदेश है।

1. इस गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक होगा—
   (a) वीरता संस्मरण (b) सच्ची वीरता
   (c) वीरों का उत्पन्न होना (d) देवदार और वीर

2. वीरता का संदेश क्या है ?
   (a) यह संकल्प कि किसी भी हालत में युद्ध जीतना है
   (b) बुद्ध जैसे राजा की भाँति विरक्त होना
   (c) उद्देश्य के लिए सच्चाई पर चट्टान की तरह अटल रहना
   (d) हमेशा नया और निराला रहना
3. वीरों की देवदार वृक्ष से तुलना की गई, क्योंकि दोनों—
   (a) खाना-पीना मिलने पर ही बढ़ते हैं
   (b) का दिल उदार होता है
   (c) सत्य का हमेशा पालन करते हैं
   (d) स्वयं पैदा होते हैं और बिना किसी के दूध पिलाये बढ़ते हैं
4. निम्नलिखित में से कौन-सा रूप वीरता का नहीं है ?
   (a) क्रोध (b) युद्ध (c) त्याग (d) दान
5. वीरता का एक विशेष लक्षण है—
   (a) नयापन (b) नकल (c) हास्य (d) करुणा

उत्तरमाला

1. (b) 2. (c) 3. (d) 4. (a) 5. (a)

14.

सामान्यतः दुष्टों की वन्दना में या तो भय रहता है या व्यंग्य, परन्तु जहाँ हम हानि होने के पहले ही हानि के कारण की वन्दना करने लगते हैं वहाँ हमारी वन्दना के मूल में भय नहीं, बल्कि उसकी स्थायी दशा की आशंका है। इस वन्दना में दुष्टों को थपकी देकर सुलाने की चाल है जिसमें विघ्न बाधाओं से जान बच सके। आशंका से उत्पन्न यह नम्रता गोस्वामी जी को आश्रय से आलंबन बना देती है। जब स्फुट अंशों के संचारी भावों तथा अनुभवों को छोड़कर वन्दना के पीछे निहित भावना की दृष्टि से देखते हैं, तो यह आश्रय से संक्रमित आलंबन का उदाहरण बन जाता है। संतों, देवताओं तथा राम की वन्दना पर्याप्त नहीं इसलिए दुष्टों की भी वन्दना की जाती है। इससे दुष्टों के महत्व की भायिक सृष्टि होती है और वह उन्हें और भी उपहास्य बना देती है।

1. दुष्ट वन्दना के पीछे लेखक का उद्देश्य है—
   (a) दुष्टों को लज्जित करना
   (b) दुष्टों को थपकी देकर सुलाना
   (c) दुष्टों से अपना बचाव करना
   (d) दुष्टों का सहयोग प्राप्त करना
2. रामचरित मानस एक भक्ति काव्य है। इसमें दुष्ट वन्दना का रहस्य है—
   (a) तुलसी की व्यापक दृष्टि
   (b) तुलसी का सभी को राममय देखना
   (c) तुलसी की उदारता (d) तुलसी का शील-सौजन्य
3. उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक हो सकता है—
   (a) तुलसी की दुष्ट वन्दना (b) तुलसी की उदारता
   (c) तुलसी का मानवीय दृष्टिकोण
   (d) उपर्युक्त तीनों
4. देवताओं, महापुरुषों, सज्जनों के साथ दुष्टों की वन्दना इसलिए सार्थक कही जायेगी कि महाकवि तुलसी दास—
   (a) संत कवि थे (b) उदार नेता थे
   (c) हित-अनहित और अपने-पराये की भावना से ऊपर उठ चुके थे
   (d) निर्वरता चाहते थे
5. जीवन में हास्य का महत्व इसलिए है कि वह जीवन को—
   (a) प्रेरणा देता है (b) आनन्दित करता है
   (c) आगे बढ़ाता है (d) सरस बनाता है

उत्तरमाला

1. (b) 2. (b) 3. (c) 4. (b) 5. (d)

15.

अस्ताचल रवि, जल छल-छल छवि
स्तब्ध विश्वकवि, जीवन उन्मन
मन्द पवन बहती सुधि रह रह
परिमल की कह कथा पुरातन
        दूर नदी पर नौका सुन्दर
        दीखी मृदु तर बहती ज्यों स्वर
        वहाँ स्नेह की प्रतनु देह की
        बिना गेह की बैठी नूतन
ऊपर शोभित मेघ सत्र सित
नीचे अमित नील जल दोलित
ध्यान-नयन मन चिन्त्य-प्राण-घन
किया शेष रवि ने कर अर्पण

1. इस कविता का सार्थक शीर्षक हो सकता है—
   (a) दिवस का अवसान (b) दिवा-गमन
   (c) अस्ताचल रवि (d) रवि का अर्पण
2. इस कविता में छायावादी कवि निराला ने—
   (a) प्रकृति का मनोरम चित्रण किया है
   (b) अस्तगत सूर्य और उसकी प्रतीक्षा में रत संध्या का वर्णन किया है
   (c) मादक भावनाओं की अभिव्यक्ति की है
   (d) सूर्यास्त का चित्रण किया है
3. इस पद्यांश में प्रयोग किया गया शब्द 'प्रतनु' अर्थ रखता है—
   (a) प्रमुदित (b) क्षीण (c) मृत (d) प्रेत
4. पण्डित निराला हिन्दी के—
   (a) श्रेष्ठ साहित्यकार थे (b) लेखक तथा कवि दोनों थे
   (c) समाजवादी कवि थे
   (d) प्रख्यात तथा सर्वोत्कृष्ट छायावादी कवि थे
5.. उपर्युक्त पद्य में प्रयुक्त 'गेह' शब्द का प्रयोग अर्थ रखता है—
   (a) गेहूँ (b) एक जीव (c) घर (d) द्वार

उत्तरमाला

1. (b) 2. (d) 3. (b) 4. (b) 5. (c)

16.

लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरता की अवतार
देख मराठे पुलकित होते उसके तलवारों के वार
नकली युद्ध व्यूह की रचना और खेलना खूब शिकार
सैन्य घेरना, दुर्ग तोड़ना ये थे उसके प्रिय खेलवार
महाराष्ट्र कुल देवी उसकी भी आराध्य भवानी थी
बुन्देले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी
खूब लड़ी मरदानी वह तो झाँसी वाली रानी थी

1. उक्त पद्यांश का सही शीर्षक हो सकता है—
   (a) झाँसी की रानी (b) 1857 का गदर
   (c) अंग्रेजों का आक्रमण (d) महाराष्ट्र कुल देवी
2. इस कविता की कवयित्री का नाम है—
   (a) महादेवी वर्मा (b) सुभद्रा कुमारी चौहान
   (c) तारा पाण्डेय (d) मीराबाई
3. इस कविता में प्रयोग किया गया रस है—
   (a) भक्ति (b) करुण (c) शृंगार (d) वीर
4. कवयित्री की अधिकांश रचनाएँ—
   (a) सामाजिक हैं (b) वात्सल्यपूर्ण हैं
   (c) देशभक्तिपूर्ण हैं (d) धार्मिक हैं

5. 'खूब लड़ी मरदानी वह तो झाँसी वाली रानी थी' में मरदानी शब्द का अर्थ है—
(a) वीरांगना (b) पुरुषों जैसी
(c) पुरुषत्ववान (d) लड़ाकू

उत्तरमाला

1. (a) 2. (b) 3. (d) 4. (c) 5. (c)

17.

आज क्यों तेरी वीणा मौन
शिथिल शिथिल तन थकित हुये कर
स्पन्दन भी भुला जाता डर
मधुर कसक सा आज हृदय में
आन समाया कौन ?
झुकती आती पलकें निश्चल
चित्रित निद्रित से तारक चल
सोता पाराबार दृगों में
भर-भर लाया कौन ?
आज क्यों तेरी वीणा मौन ?

1. इस कविता के रचयिता हैं—
(a) सुमित्रानंदन पन्त (b) सुभद्रा कुमारी चौहान
(c) महादेवी वर्मा (d) मीराबाई
2. 'नीरजा' से उद्धृत इस कविता का आशय है—
(a) न जाने आज क्यों उनकी हृदतंत्री बज नहीं रही
(b) दुःखों से आपूरित हृदय तथा नेत्रों के अश्रुमय होने के बावजूद वीणा मौन क्यों है ?
(c) विरह व्यथा की कसक तन-मन को व्याकुल बना रही है, फिर भी आहें नहीं भरी जातीं, रहस्य प्रकट करने में न जाने मैं क्यों असमर्थ हूँ
(d) विरह व्यथा की कथा अकथनीय है
3. इस कविता का उपयुक्त शीर्षक होगा—
(a) सुधि बन छाया कौन (b) आज क्यों तेरी वीणा मौन
(c) हृदय में आन समाया कौन (d) मौन वीणा का रहस्य
4. कवयित्री के बारे में यह निर्विवाद सत्य है कि वह—
(a) सर्वोत्कृष्ट कवयित्री थी (b) साधना में दूसरी मीरा थी
(c) छायावादीत्रयी में न होकर अपनी विशिष्ट पहचान रखती थी
(d) सुप्रसिद्ध छायावादी कवयित्री थी
5. भाव व्यंजना की दृष्टि से यह कविता —
(a) दुर्बोध रचना है (b) श्रेष्ठ रचनाओं में से एक है
(c) आरम्भिक रचना है
(d) प्रकृति चित्रण की दृष्टि से बेजोड़ है

उत्तरमाला

1. (c) 2. (a) 3. (b) 4. (b) 5. (b)

18.

राज भाषा का अर्थ राजा या राज्य की भाषा है। वह भाषा जिसमें शासक या शासन का काम होता है। राष्ट्र भाषा वह है जिसका व्यवहार राष्ट्र के सामान्य जन करते हैं। राजभाषा का क्षेत्र सीमित होता है। राष्ट्र भाषा सारे देश की संपर्क भाषा है। राष्ट्र भाषा के साथ जनता का भावात्मक लगाव रहता है। क्योंकि उसके साथ जनसाधारण की सांस्कृतिक परंपरायें जुड़ी रहती हैं। राजभाषा के प्रति वैसा सम्मान हो तो सकता है, लेकिन नहीं भी हो सकता है, क्योंकि वह अपने देश की भी हो सकती है। किसी गैर देश से आये शासक की भी हो सकती है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में आज हिन्दी राजभाषा के रूप में ही विराजित है। 14 सितंबर, 1949 ई. को भारत के संविधान में हिन्दी को मान्यता प्रदान की गई है। संविधान की धारा 120 के अनुसार संसद का कार्य हिन्दी में या अंग्रेजी में किया जाता है। धारा 210 के अंतर्गत राज्यों के विधानमंडलों का कार्य अपने-अपने राज्य की राजभाषा या हिन्दी में या अंग्रेजी में किया जा सकता है। 343 के अनुसार संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी। इस भाषा का प्रसार तथा प्रचार के लिए महात्मा गाँधी का योगदान रहा है। धारा 344 में राष्ट्रपति को शासकीय कार्य में हिन्दी भाषा का प्रयोग अधिक करने के लिए कहा गया है।

1. राष्ट्रभाषा के प्रमुख लक्षणों में से इनमें से कौन-सा व्यवहार नहीं है ?
(a) क्षेत्र सीमित होता है (b) सामान्य जन भाषा है
(c) सारे देश की संपर्क भाषा है
(d) जनता की भावानात्मक तथा सांस्कृतिक भाषा है
2. हिन्दी भाषा को भारतीय संविधान में किस साल मान्यता प्राप्त हुई है ?
(a) 1947 (b) 1948 (c) 1949 (d) 1950
3. इस अनुच्छेद का निम्न में से उचित शीर्षक चुनिए।
(a) राजभाषा और राष्ट्रभाषा (b) भावनात्मक भाषा
(c) जनभाषा (d) बोलचाल की भाषा
4. इस अनुच्छेद के सार में किस भाषा को ज्यादा जोर देने की बात कही गयी है ?
(a) भारतीय सभी भाषाओं को (b) हिन्दी भाषा को
(c) संविधानिक भाषा को (d) दक्षिण की भाषा को
5. भारतीय किस भाषा को विश्व भाषा बनने की ज्यादा संभावना है ?
(a) कन्नड़ (b) मराठी (c) गुजराती (d) हिन्दी
6. धारा 344 किसे हिन्दी भाषा का प्रयोग ज्यादा शासकीय कार्य के लिए करने की बात कही गयी है ?
(a) मुख्यमंत्री (b) प्रधानमंत्री (c) राष्ट्रपति (d) शासकगण
7. आजादी के बाद देश में राजभाषा के रूप में कौन-सी भाषा स्थित है ?
(a) कन्नड़ (b) पंजाबी (c) हिन्दी (d) अंग्रेजी
8. भारत वर्ष में हिन्दी दिवस कब मनाया जाता है ?
(a) 2 अक्टुबर (b) 15 अगस्त
(c) 26 जनवरी (d) 14 सितंबर
9. हिन्दी भाषा के प्रचार एवं प्रसार में किसका योगदान रहा ?
(a) महात्मा गाँधीजी (b) जवाहरलाल नेहरु
(c) सुभाष चंद्र बोस (d) जय प्रकाश नारायण
10. संघ की राजभाषा हिन्दी तथा लिपि देवनागरी का उल्लेख किसमें है ?
(a) भारत में (b) संविधान में
(c) संविधान के 343 धारा में (d) सभी धारा के अंतर्गत
11. राजभाषा का अर्थ क्या है ?
(a) देश की भाषा (b) नगर की भाषा
(c) राजा या राज्य की भाषा (d) विदेशियों की भाषा
12. संविधान के किस धारा के अंतर्गत संसद का कार्य-कलाप हिन्दी या अंग्रेजी में करने का उल्लेख है ?
(a) धारा 210 (b) धारा 120 (c) धारा 343 (d) धारा 344
13. हिन्दी भाषा की लिपि क्या है ?
(a) द्राविड़ (b) देवनागरी (c) ब्राह्मी (d) खरोष्टी
14. इनमें से कौन-सी धारा हिन्दी भाषा के लिए अन्वित नहीं है ?
(a) धारा 100 (b) धारा 120 (c) धारा 210 (d) धारा 343
15. राज्य विधानमंडलों के कार्य-कलाप संबंधी भाषा का उल्लेख संविधान की कौन-सी धारा करती है ?
(a) धारा 210 (b) धारा 343 (c) धारा 344 (d) धारा 345

उत्तरमाला

1. (a) 2. (c) 3. (a) 4. (b) 5. (d) 6. (c)
7. (c) 8. (d) 9. (a) 10. (c) 11. (c) 12. (b)
13. (b) 14. (a) 15. (a)